विशालकाय भूल

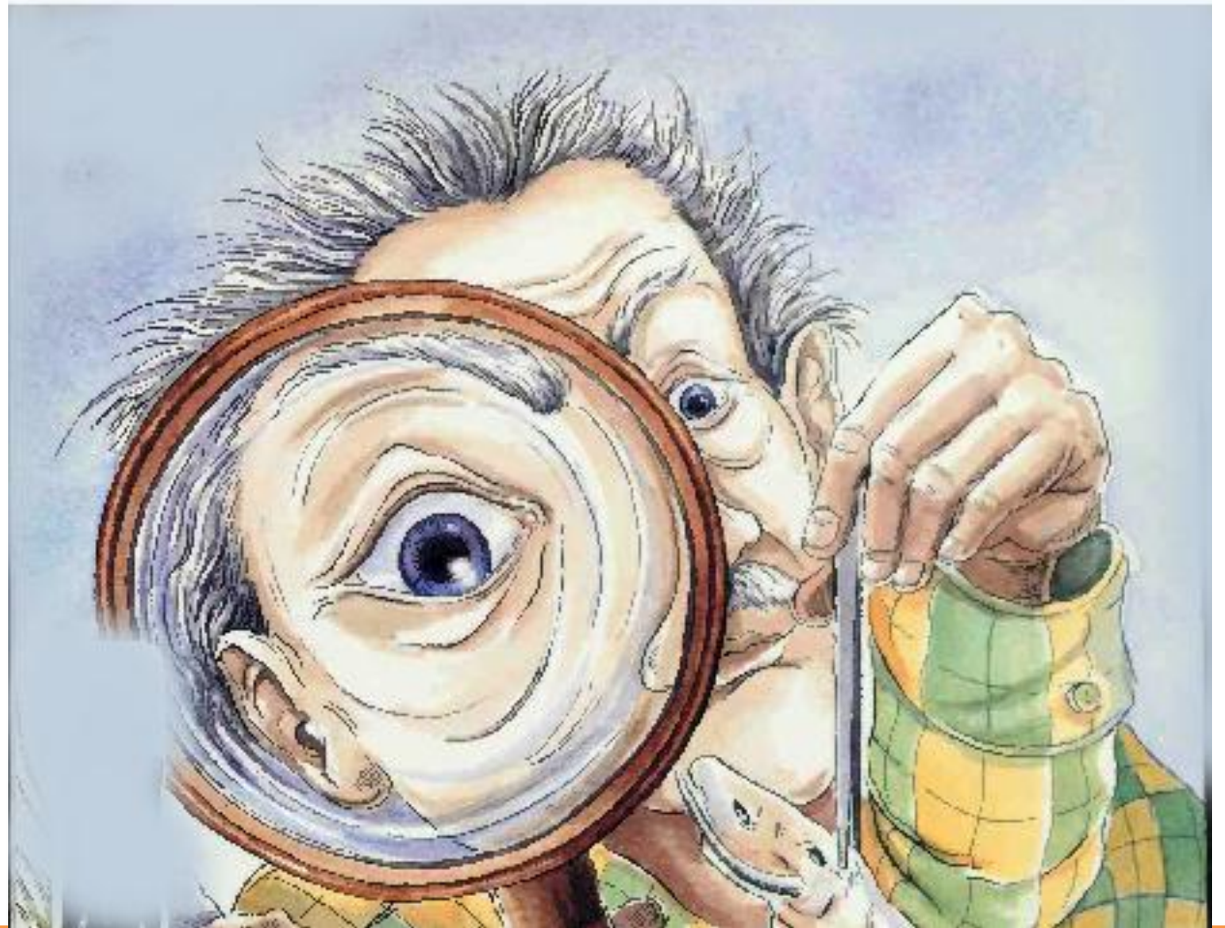

विशालकाय भूल

यह घटनाक्रम तब शुरू हुआ जब पिता ने समाचारपत्र में यह विज्ञापन देखा:

बच्चों के लिए पुरातात्विक खोज करने का अवसर
कुछ पद अभी भी खाली हैं
बहुत ही योग्य, पुरातत्व
विज्ञानी के साथ काम
करने का अवसर.
प्राचीन युग के रहस्यों
की खोज कर सकते हैं.

प्रोफेसर नॉरमन को फोन करें
555-7867
आखिर, क्या पता.....

"रैचल, यह अच्छा अवसर है," पिता ने कहा. "छुट्टियों में करने के लिए तुम्हारे पास कोई काम होगा."

"टेलीविज़न देखने में क्या बुराई है?" मैंने पूछा.

पिता ने त्योरी चढ़ाई. "तुम्हें बाहर स्वच्छ हवा में जाना चाहिए."

"लेकिन मुझे पुरातत्-जो-कुछ-भी-हैं पसंद नहीं हैं. वह उबाऊ होते हैं."

“पिछली गर्मियों में जिस अजायबघर में मैं तुम्हें ले गया था वह तुम्हें अच्छा लगा था,” पिता ने कहा.

मैंने कोई उत्तर न दिया. सच तो यह है कि मुझे अजायबघर अच्छा न लगा था. वहाँ की उपहार बेचने वाली दुकान ही सिर्फ अच्छी थी. वहाँ मैंने मोंटी खरीदा था.

मोंटी एक छोटा, रोमिल विशालकाय हाथी था जो चौदह हज़ार वर्ष पहले बना था.

वैसे वह सच में उतना पुराना नहीं था. वह तो बस उस उपकरण का प्रतिरूप था जिसका उपयोग प्रचीन लोग करते थे. वास्तविक उपकरण तो अजायबघर में एक शीशे की अलमारी में रखा था. मैंने मोंटी को प्लास्टिक के डिब्बे में प्रदर्शन के लिए रखा था.

“मुझ पर दया करें” वाली दृष्टि से मैंने पिता को देखा. लेकिन उन पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा.

अगले दिन दस बजे मैं पुरातत्व विज्ञानी के घर में थी. मैं मोंटी को अपने साथ ले गई थी.

आरंभ से ही प्रोफेसर नॉरमन के साथ मेरी न बनी. उन्होंने वह जगह, जो एक पुराना बिखरता हुआ घर था और जिसके अहाते में पेड़-पौधे बहुत अधिक फैले हुए थे, इसलिए खरीदी थी क्योंकि पुरातत्व विज्ञान के लिए उन्हें वह महत्वपूर्ण लगती थी.

“यह कितने आश्चर्य की बात है कि पुरानी वस्तुओं से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, यहाँ तक कि प्रचीन कचड़े से भी,” हमारे पहुँचने के तुरंत बाद प्रोफेसर नॉरमन ने कहा.

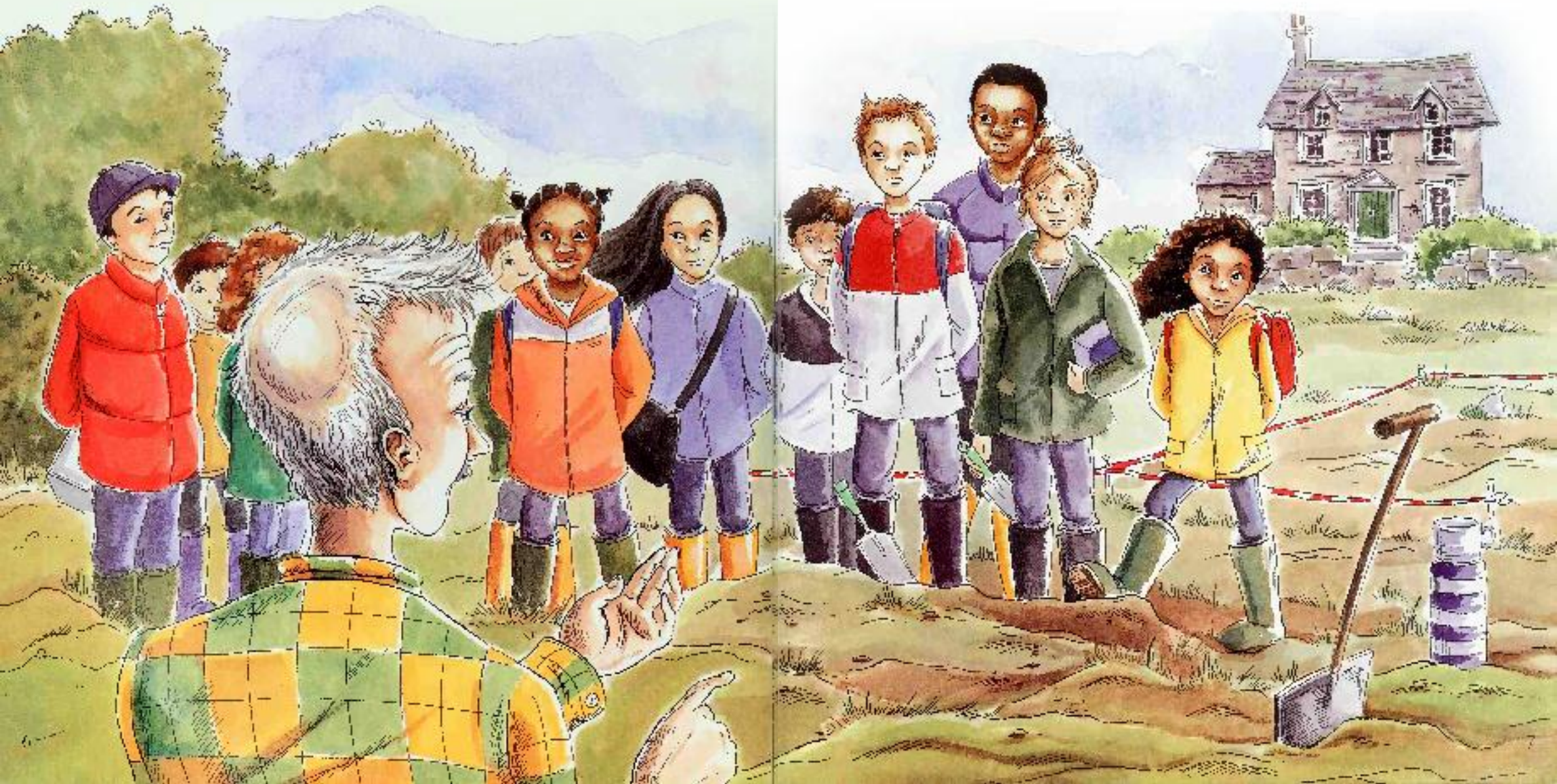

सब बच्चे बहुत प्रभावित दिखाई दे रहे थे. प्रचीन कचड़े में कोहनियों तक अपने हाथ डालने को वह तत्पर लगते थे. लेकिन मैं अपने को रोक न पाई. मेरे मन की बात मेरे होंठों तक आ ही गई.

"छी!" मैंने कहा. "मैं उस कचड़े में हाथ नहीं डालूँगी."

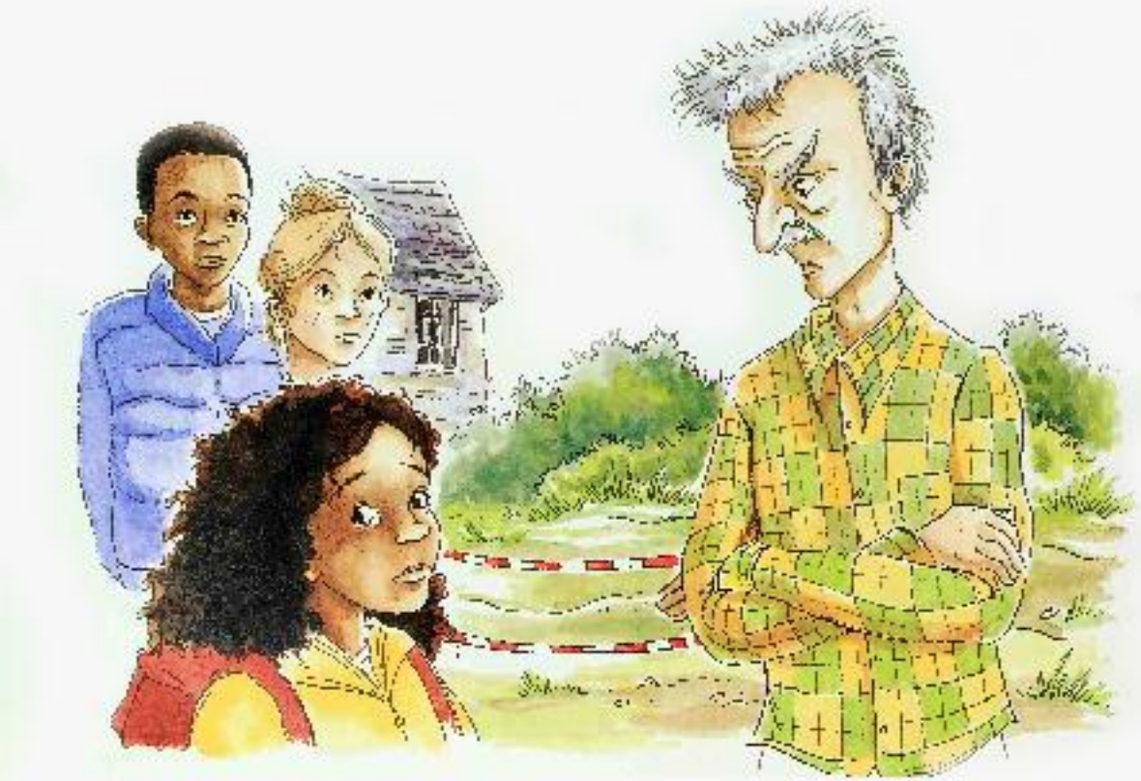

प्रोफेसर नॉरमन ने मुझे घूर कर देखा. उसके बाद वह मुझे दंड देने लगे. सबसे गंदा और सबसे उबाऊ काम वह मुझे ही देने लगे.

लंच के समय तक मैं पूरी तरह उकता गई थी. मैं अकेले एक जगह बैठ गई और अपना सैंडविच खाने लगी. सिर्फ मोंटी मेरे संग था. मैं उसे अपने साथ लाई थी ताकि मैं प्रोफेसर नॉरमन से उसके बारे में कुछ प्रश्न पूछ सकूँ. लेकिन जब प्रोफेसर नॉरमन ने मेरे साथ बुरा व्यवहार किया तो कोई प्रश्न पूछने का मेरा मन न हुआ.

मैंने मोंटी को उसके डिब्बे से बाहर निकाला. डिब्बे पर एक लेबल लगा था जिस पर लिखा था कि यह एक उपकरण है जिस का उपयोग प्राचीन काल के लोग शिकार करने के लिए करते थे. शायद मोंटी मेरे लिए कोई प्राचीन खज़ाना खोज निकाले.

"काम पर लौटने का समय हो गया है!" प्रोफेसर नॉरमन ने कहा. "ठेलागाड़ी लेकर आओ. हमें ढेर सारा कीचड़ हटाना है."

"ओह नहीं....." मैं कहने लगी, लेकिन प्रोफेसर नॉरमन ने फिर से मुझे घूर कर देखा और मैंने अपना विचार बदल दिया. मैंने झट से मोंटी को अपनी जेब में रख लिया. फिर मैं ठेलागाड़ी लेने चल दी.

तभी असली मुसीबत शुरु हुई.

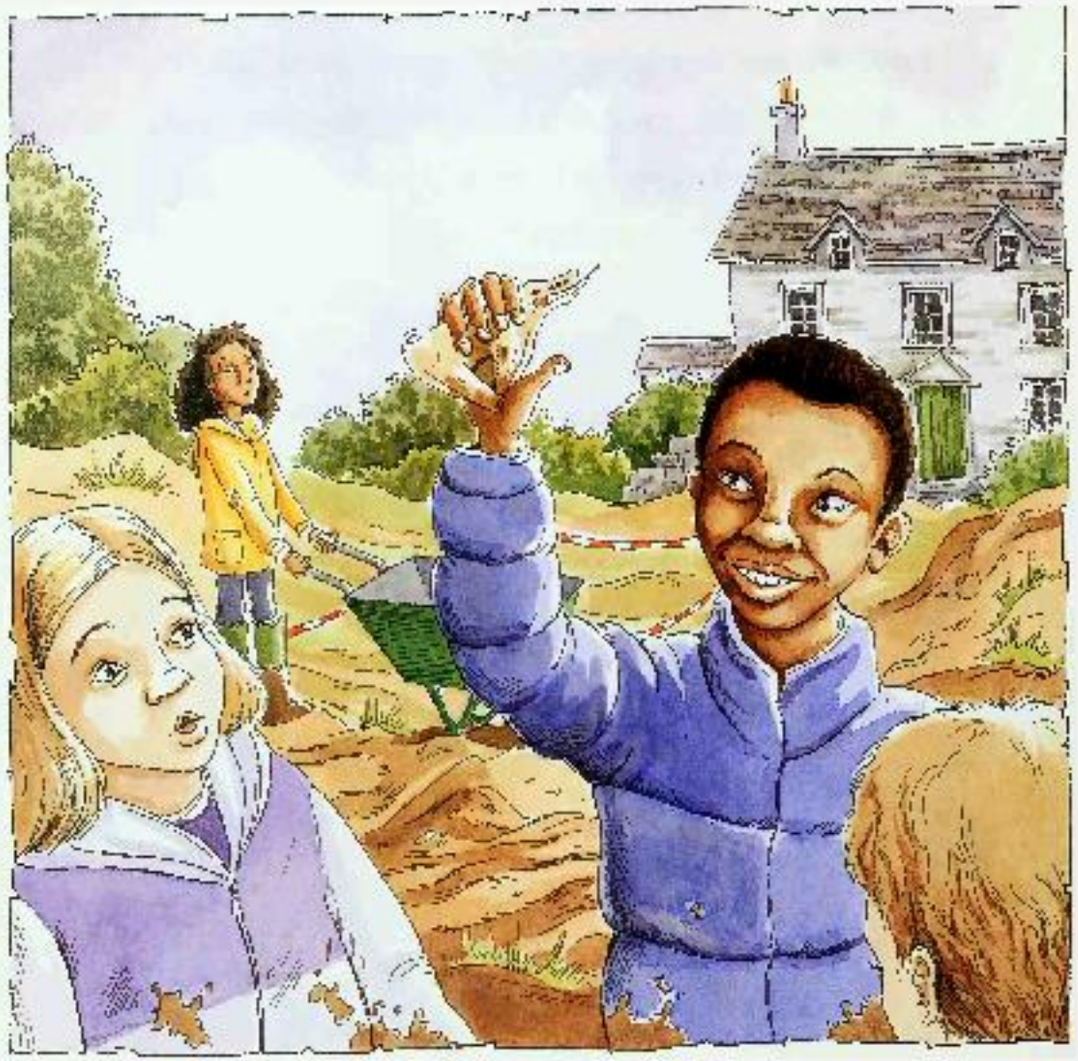

“मुझे किसी प्रकार का गहना मिला है!” एक बच्चे ने चिल्लाकर कहा. उसने कीचड़ में लिपटी कोई छोटी सी वस्तु उठा रखी थी. मैं तुरंत जान गई कि वह क्या थी. मोंटी मेरी जेब से निकल कर कीचड़ में गिर गया था.

तब भी यह कोई समस्या नहीं होनी चाहिए थी. प्रोफेसर नॉरमन तो जानते होंगे कि मोंटी सिर्फ एक प्रतिरूप था. मोंटी को वापस लेने के लिए मैं आगे आई.

“पीछे रहो,” प्रोफेसर नॉरमन गुर्राये. “यह इस शताब्दी की सबसे महान खोज हो सकती है.”

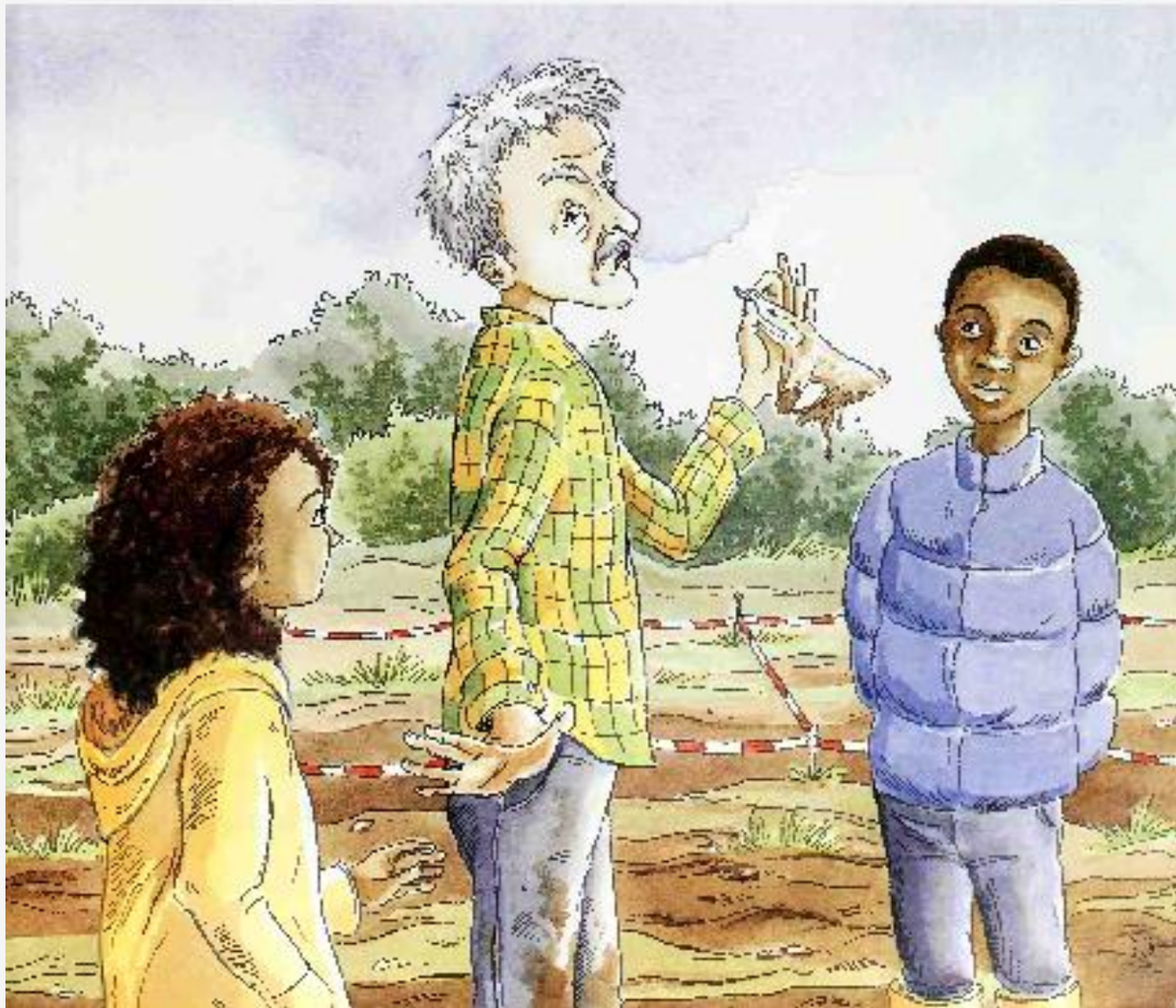

प्रोफेसर नॉरमन ने मोंटी को एक चिमटे से पकड़ कर उठाया.

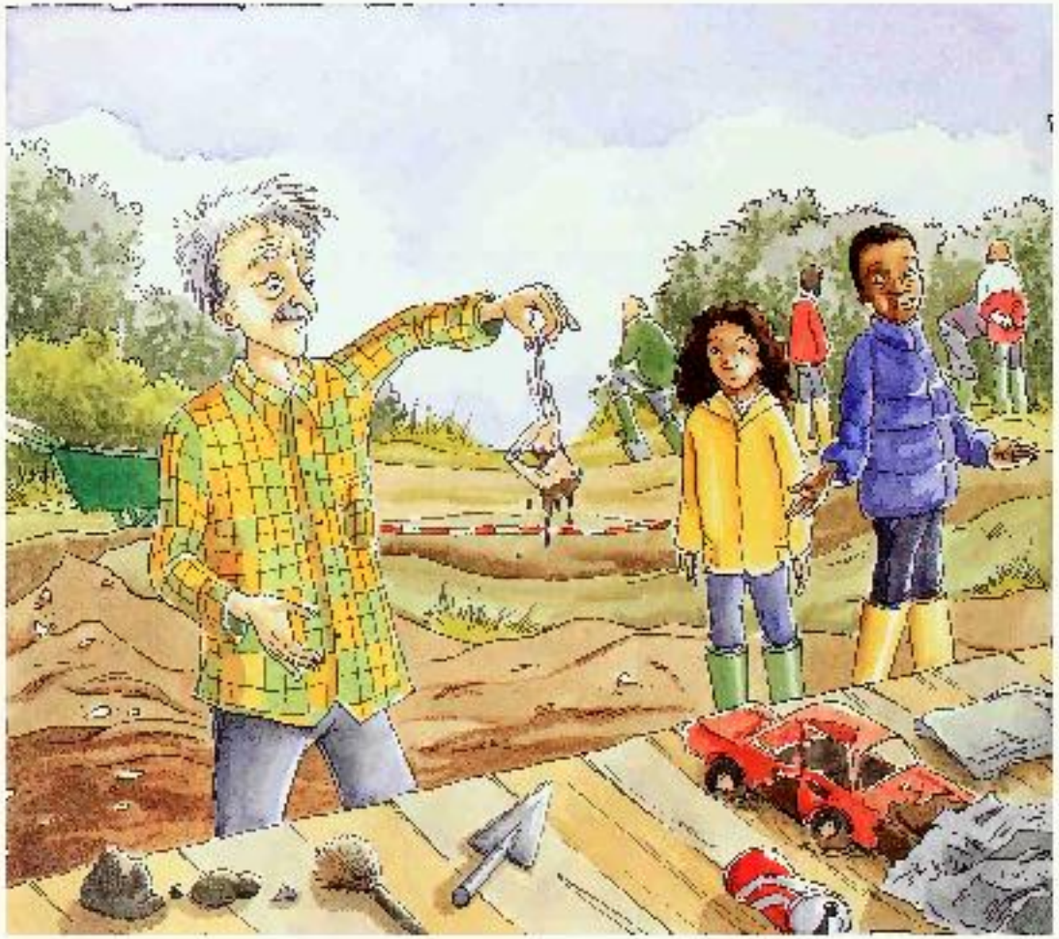

वह मोंटी को अहाते के एक तरफ रखी उस मेज़ पर ले आए जिस पर खोजी हुई वस्तुयें रखी जानी थी. आवर्धक लेंस (Magnifying Glass) की सहायता से वह मोंटी का निरीक्षण करने लगे.

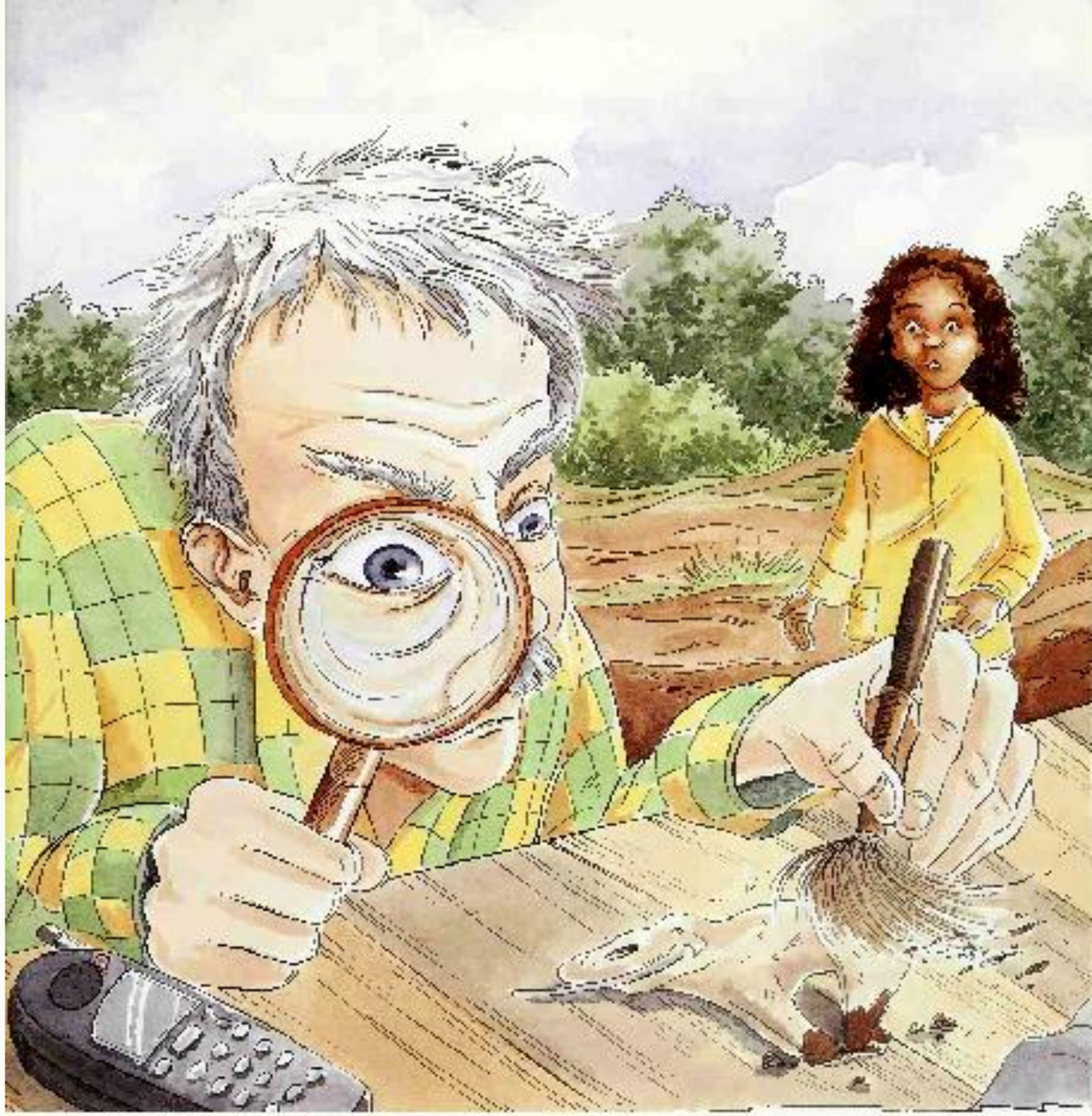

मैं घबरा गई थी. किसी भी पल प्रोफेसर नॉरमन समझ जायेंगे कि उनके साथ छल हुआ था और क्रोधित हो जायेंगे.

पर ऐसा नहीं हुआ. प्रोफेसर नॉरमन झटपट अपने मोबाइल फोन पर बात करने लगे.

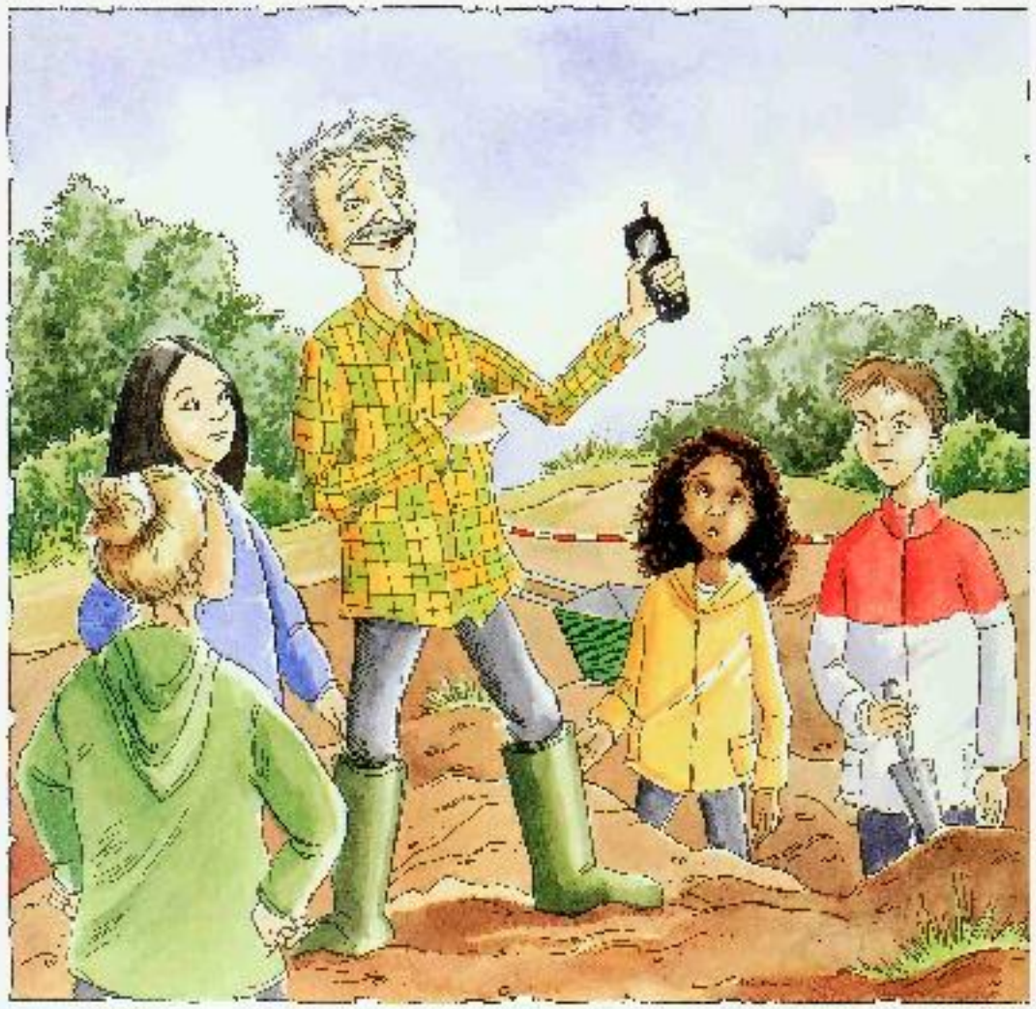

“मैंने टेलीविज़न वालों को बुलाया है,” उन्होंने कहा, “और वह शीघ्र ही यहाँ पहुँच जायेंगे.”

“मैंने तब उन्हें बताने का प्रयास किया, मैंने सच में प्रयास किया. “प्रोफेसर नॉरमन, मैं.....”

“जल्दी करो और काम पर लग जाओ,” प्रोफेसर नॉरमन ने मुझ से कहा. “मेरे लिए यह एक सुनहरा अवसर है. मैं चाहता हूँ कि यहाँ सब व्यस्त और प्रसन्नचित दिखाई दें.”

“लेकिन मैं यह कहना....”

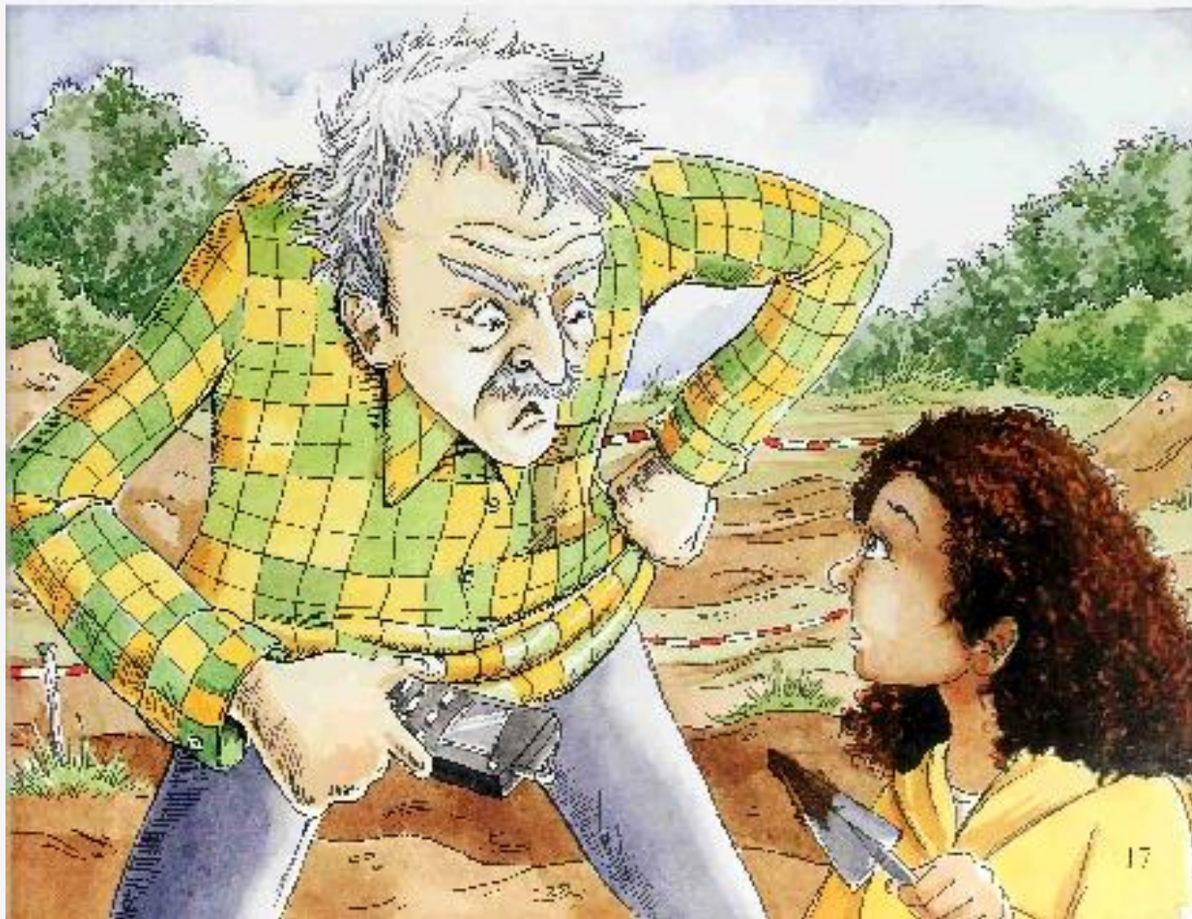

तभी एक महिला और एक पुरुष वहाँ आ पहुँचे. पुरुष ने टीवी कैमरा पकड़ रखा था. प्रोफेसर नॉरमन अपने हाथ मलने लगे.

“आपका स्वागत है,” उन्होंने कहा, “मुझे विश्वास है कि आपके दर्शक इस खोज के विषय में अवश्य जानना चाहेंगे.....”

मैं और सहन न कर सकती थी. इसके अतिरिक्त मैं किसी भी भांति अपना मोंटी वापस पाना चाहती थी.

“वास्तव में,” मैंने ऊँची आवाज़ में कहा, “वह मेरा है,”

प्रोफेसर नॉरमन ने मुझे ऐसे देखा जैसे कि वह कामना कर रहे हों कि मैं चौदह हज़ार वर्ष दूर होती. टीवी वाले मुस्कराए, लेकिन वह अपना कैमरा लगाते रहे.

“मैं अपनी बात प्रमाणित कर सकती हूँ,” मैंने उन्हें प्लास्टिक का डिब्बा दिखाया और उस पर लगे लेबल की ओर संकेत किया.

वैज़्ली हिल अजायबघर

रेंडियर की हड्डी से बना एक प्रचीन

उपकरण का प्रतिरूप

टीवी के लोग अचानक उत्सुक हो गए. “तो प्रोफेसर नॉरमन, क्या आप नहीं जानते थे कि यह नकली है?” टीवी की महिला ने पूछा.

“मैं.....” प्रोफेसर नॉरमन घर की ओर खिसकने लगे. “अम्म्म.....बेशक मुझे पता था! यह तो एक मज़ाक था,” वह बोले, लेकिन उनका चेहरा लाल हो गया था. निश्चिय ही वह हँस नहीं रहे थे.

“लेकिन जब आपने हमें फोन किया था तो आपने कहा था कि आपने एक प्रचीन उपकरण खोज निकाला है,” कैमरामैन ने कहा.

“मैं.....” प्रोफेसर नॉरमन बड़बड़ाने और बुदबुदाने लगे. “कोई भी गलती कर सकता है, क्यों, नहीं कर सकता क्या?”

टीवी के लोग प्रसन्न न दिखाई दिये. सिर्फ मोंटी के लिए उन्हें इतनी दूर आना पड़ा था. प्रोफेसर नॉरमन तो और भी कम प्रसन्न लग रहे थे.

“मुझे अपना उपकरण वापस चाहिए,” मैंने कहा.

प्रोफेसर नॉरमन ने मुझे घूर कर देखा. उन्होंने मोंटी को ज़मीन पर फेंक दिया और भाग कर अपने घर के अंदर चले गए.

इस तरह हमारे दिन की समाप्ति हुई. जब मैं वहाँ से आई तो टीवी वाले अभी वहीं थे. मुझे लगा कि वह प्रोफेसर नॉरमन से दुबारा बात करना चाहते थे. जैसी वह चाहते थे, समाचार-रिपोर्ट वैसी बिलकुल न थी.

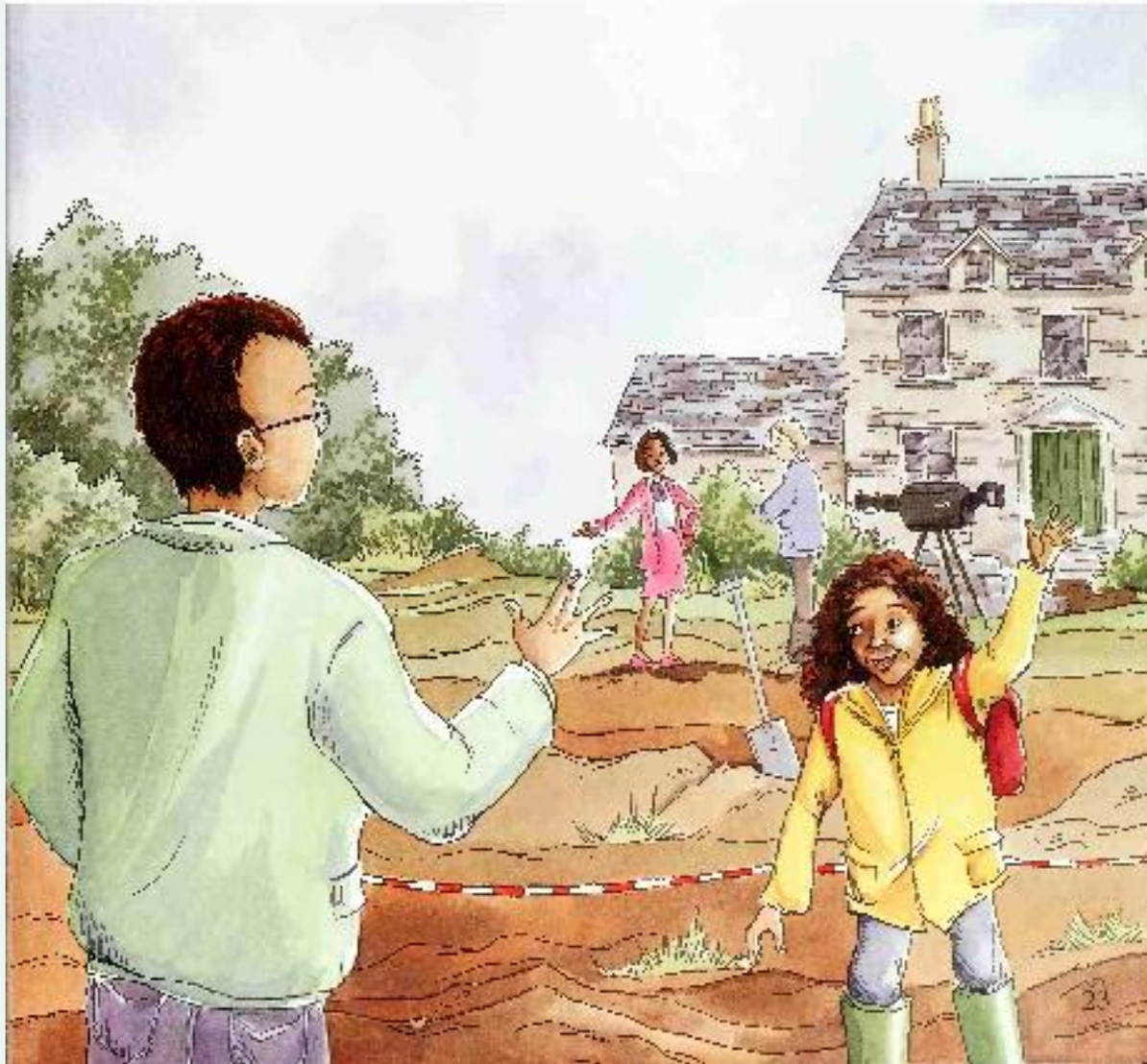

पिता ने कहा कि टीवी देख कर शायद मुझे अधिक मज़ा आता. लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है कि मैं टीवी देखना नहीं चाहती थी. उसके बजाय मैं शाम के समय मोंटी और एक ठेलागाड़ी ले कर बाहर आ गई और खुदाई करने लगी.

आखिर, क्या पता.....

समाप्त